17 मई 2019, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि

प्रतिदिन

प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 42, अंक : 4 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

मई (द्वितीय), 2019 (वीर नि.संवत्-2545) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अनेक स्थानों पर बाल संस्कार शिविर संपन्न

ग्रीष्मकालीन अवकाश के अवसर पर देशभर में अनेक स्थानों पर ग्रुप शिविर एवं बाल संस्कार शिविरों के माध्यम से अभूतपूर्व तत्त्वप्रचार हो रहा है। सभी स्थानों पर जिनेन्द्र-पूजन, प्रवचन, बाल कक्षाएं, जिनेन्द्र-भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा है। इसी क्रम में कुछ स्थानों के शिविरों का विवरण यहाँ दिया जा रहा है, शेष आगामी अंकों में दिया जायेगा।

● **इन्दौर (म.प्र.) :** यहाँ सन्मति स्कूल नौलखा में श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट द्वारा दिनांक 28 अप्रैल से 5 मई तक 19वें जैनत्व बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर टोडरमल महाविद्यालय जयपुर, बांसवाड़ा विद्यालय, कोटा विद्यालय एवं आत्मार्थी विद्यालय दिल्ली के विद्वानों के अतिरिक्त पण्डित सौरभजी शास्त्री, पण्डित गौरवजी शास्त्री का समागम प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त पण्डित रितेशजी शास्त्री सनावद एवं पण्डित अशोकजी शास्त्री राघौगढ का भी विशेष सहयोग रहा। शिविर में लगभग 650 बच्चों ने जैनत्व के संस्कार ग्रहण किये।

● **देवलाली-नासिक (महा.) :** यहाँ श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 8 से 14 मई तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर, पण्डित अनिलजी दहिसर, पण्डित अभयजी खैरागढ, पण्डित आशीषजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री, पण्डित देवांगजी शास्त्री, पण्डित मंथनजी शास्त्री, पण्डित उर्विशजी शास्त्री, ब्र.चेतनाबेन, जिनल बेन, स्वस्ति जैन जबलपुर, श्रुति खैरागढ आदि का समागम प्राप्त हुआ। शिविर का निर्देशन पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर ने किया। शिविर में जिनेन्द्र-पूजन, कक्षाएं, गुरुदेव का प्रवचन, विरागजी द्वारा पौराणिक कथा, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि कार्यक्रम हुये, जिसमें मुम्बई, जबलपुर, जलगांव, औरंगाबाद, हैदराबाद, मालेगांव आदि स्थानों के लगभग 300 बच्चों ने लाभ लिया।

● **गुना (म.प्र.) :** यहाँ नई सड़क स्थित श्री वर्धमान दिगम्बर जैन मंदिर वीतराग विज्ञान भवन में दिनांक 1 से 10 मई तक 18वाँ आध्यात्मिक बाल/युवा संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित अशोकजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित अश्विनजी नानावटी नौगांव, पण्डित शनिजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री कोटा का समागम प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त अनेक स्थानीय विद्वानों का भी समागम प्राप्त हुआ। शिविर में पूजन प्रशिक्षण, द्रव्य-गुण-पर्याय, ध्यान, चार अभाव, भक्तामर स्तोत्र आदि विषयों पर कक्षाएं ली गईं, जिनका 130 बच्चों के अतिरिक्त 150 साधर्मियों ने लाभ लिया।

● **ग्वालियर (म.प्र.) :** यहाँ अ.भा. जैन युवा फैडरेशन द्वारा दिनांक 7 से 13 मई तक नैतिक शिक्षा समर कैम्प का आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिदिन प्रार्थना, पूजन, बाल कक्षाएं, कण्ठपाठ, जिनेन्द्र-भक्ति, ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताएं, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि गतिविधियाँ संपन्न हुईं।

शिविर में पण्डित अजितजी अचल, पण्डित अविरलजी शास्त्री, पण्डित अमनजी शास्त्री, श्रीमती मंजू दीदी, श्रीमती आरती दीदी, रश्मि, निकिता, श्रद्धा, आकांक्षा आदि के द्वारा धार्मिक कक्षाएं ली गईं। शिविर का निर्देशन पण्डित शुद्धात्मजी शास्त्री द्वारा किया गया।

ग्रीष्मकालीन ग्रुप शिविर संपन्न

कोटा (राज.) : यहाँ ग्रीष्मकालीन अवकाश के समय पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के निर्देशन एवं मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा के तत्त्वावधान में दिनांक 1 से 9 मई तक राजस्थान के 15 और मध्यप्रदेश के 45 - इसप्रकार कुल 60 स्थानों पर बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर लगभग 80 विद्वानों द्वारा 4000 से अधिक बच्चों एवं 1500 से अधिक साधर्मियों को धर्मलाभ मिला।

शिविर में श्री प्रेमचंदजी बजाज, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित संजयजी शास्त्री जयपुर एवं पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर का विशेष मार्गदर्शन व सहयोग प्राप्त हुआ। शिविर के संयोजक मयंकजी शास्त्री बण्डा, देवांशुजी शास्त्री व अनुजजी शास्त्री खड़ैरी थे तथा समन्वयक गोम्मटेशजी शास्त्री, अभिनयजी शास्त्री, निलयजी शास्त्री, नीतेशजी शास्त्री, पीयूषजी शास्त्री, चेतनजी शास्त्री, चैतन्यजी शास्त्री थे।

सम्पादकीय –

29

ऐसे क्या पाप किये?

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

आचार्य अमृतचन्द्र ने आत्मा में मोह-राग-द्वेष की उत्पत्ति और उनके निमित्त से स्व-पर प्राण व्यपरोपण को हिंसा कहा है। झूँठ, चोरी, कुशील और परिग्रह के माध्यम से भी आत्मा में मोह-राग-द्वेष की उत्पत्ति होती है और स्वपर प्राणों को पीड़ा भी पहुँचती है - इस कारण झूँठ, चोरी आदि पाप भी प्रकारान्तर से हिंसा ही है।

''सूक्ष्मापि न खलु हिंसा परवस्तुनिबन्धना भवति पुंसा।
हिंसायतन निवृत्तिः परिणाम विशुद्धये तदापि कार्या।।''[१]

यद्यपि परवस्तु के कारण सूक्ष्म हिंसा भी नहीं होती तथापि परिणामों की निर्मलता के लिए हिंसा के आयतन बाह्य परिग्रहादि से एवं अन्तरंग कषायादि का त्यागकर उनसे निवृत्ति लेना उचित है।''

इस आत्मा के जिस अंश में सम्यग्दर्शन है, उस अंश (पर्याय) से बंध नहीं है तथा जिस अंश में राग है, उस अंश से बन्ध होता है।

जिस अंश में इसके चारित्र है उस अंश से बन्ध नहीं और जिस अंश में राग है, उस अंश से बन्ध होता है।

जीव के तीन प्रकार हैं (१) बहिरात्मा (२) अन्तरात्मा (३) परमात्मा। बहिरात्मा के तो रत्नत्रय हैं ही नहीं, अतः उनके तो सर्वथा बंध है परमात्मा का रत्नत्रय परिपूर्ण हो चुका है। अतः उनके बन्ध का सर्वथा अभाव है। बस एक अन्तरात्मा ही है, जिनके अंशरूप में रत्नत्रय प्रगट होता है। वे अन्तरात्मा चतुर्थ गुणस्थान से बारहवें गुणस्थान तक होते हैं। उनके जिस अंश में रत्नत्रय प्रगट हुआ है, उस अंश में राग का अभाव होने से कर्मबन्ध नहीं होता और जिस अंश में राग रहता है, उस अंश से कर्मबन्ध होता है।

यद्यपि आचार्य अमृतचन्द्र एक विशुद्ध आध्यात्मिक सन्त पुरुष हैं और वे अपनी लेखनी और काव्य प्रतिभा का पूरा उपयोग स्व-पर कल्याण में ही करना चाहते हैं, अतः उनके द्वारा साहित्यिक सौन्दर्य या काव्यकला के प्रदर्शन की कल्पना भी नहीं की जा सकती, तथापि उनमें गहन काव्य-प्रतिभा होने से उनके साहित्य में स्वभावतः साहित्यिक सौन्दर्य भी आ गया है।

संस्कृत भाषा पर तो आचार्य अमृतचन्द्र का असाधारण अधिकार है ही, प्राकृत भाषा के भी वे मर्मज्ञ विद्वान थे। अन्यथा कुन्दकुन्द को कैसे पढ़/समझ सकते थे। उनके समयसार, प्रवचनसार जैसे गूढ़ गम्भीर शास्त्रों का दोहन करना एवं उसे सुसंस्कृत सशक्त भाषा में ऐसी अभिव्यक्ति देना अमृतचन्द्र जैसे समर्थ आचार्य का ही काम था।

प्रस्तुत ग्रन्थ की भाषा अत्यन्त सरल, सुबोध और प्रांजल है। जहाँ एक ओर इस ग्रन्थ में उनकी संस्कृत भाषा इतनी सरल, सहज व बोधगम्य है, वहीं दूसरी ओर उनके टीका ग्रन्थों में लम्बी-लम्बी शैलियों पर समान अधिकार है। वे केवल आध्यात्मिक सन्त ही नहीं, बल्कि एक रससिद्ध कवि एवं विचारशील लेखक भी हैं।

आपकी पद्य शैली में स्पष्टता, सुबोधता, मधुरता और भावाभिव्यक्ति की अद्भुत सामर्थ्य है। सभी पद्य प्रसाद गुण संयुक्त और शांत रस से सराबोर हैं। यद्यपि यह सम्पूर्ण ग्रंथ आर्या छन्द में है, तथापि परम अध्यात्म तरंगिणी आदि आचार्य अमृतचन्द्र ने हिंसा-अहिंसा के अनेक भंगों की मीमांसा की है, जो मूलतः पठनीय है।

जैनदर्शन का मूल ''वस्तुस्वातंत्र्य'' जैसा पुरुषार्थसिद्धयुपाय में प्रतिपादित हुआ है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। कार्य स्वयं में ही होता है, स्वयं से ही होता है पर पर पदार्थ तो उसमें निमित्त मात्र ही होते हैं।

निमित्त-उपादान की अपनी-अपनी मर्यादायें हैं। जीव के परिणाम रूप भावकर्म एवं पुद्गल के परिणामरूप द्रव्यकर्म में परस्पर क्या सम्बन्ध है - इस बात को वे इसप्रकार स्पष्ट करते हैं -

''जीवकृतं परिणामं निमित्त मात्रं प्रपद्य पुनरन्ये।
स्वयमेव परिणमन्तेऽत्र पुद्गलाः कर्म भावेन।।
परिणममानस्य चितचिदात्मकैः स्वयमपि स्वकैर्भावैः।
भवति हि निमित्तमात्रं पौद्गलिकं कर्म तस्यापि।।

जीव के रागादि परिणामों का निमित्त मात्र पाकर कार्माण वर्गणा स्वयं ही कर्मरूप में परिणमित होती हैं। इसीप्रकार जीव भी कर्मोदय का निमित्त पाकर स्वयं ही रागादि भावरूप परिणमता है।''

''रत्नत्रय ही मुक्ति का कारण है और रत्नत्रय मुक्ति का ही कारण है।'' - इस तथ्य को भी इसमें बड़ी खूबी से उजागर किया गया है। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप निश्चय रत्नत्रय ही मुक्ति का कारण है, शुभभाव रूप व्यवहार रत्नत्रय अर्थात् रागभाव मुक्ति का कारण नहीं है। इसीप्रकार

१. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय – ४९

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र निश्चय से मुक्ति के ही कारण हैं, बन्ध के कारण रंचमात्र नहीं हैं। रत्नत्रय और राग का फल बताते हुए वे साफ-साफ लिखते हैं -

''येनांशेन सुदृष्टिस्तेनांशेनास्य बन्धनं नास्ति।
येनांशेन तु रागस्तेनांशेनास्य बन्धनं भवति।।
येनांशेन ज्ञानं तेनांशेनास्य बन्धनं नास्ति।
येनांशेन तु रागस्तेनांशेनास्य बन्धनं भवति।।
येनांशेन चरित्रं तेनाशेनास्य बन्धनं नास्ति।
येनांशेन तु रागस्तेनांशनास्य बन्धनं भवति।।[१]

इस आत्मा के जितने अंश में सम्यग्दर्शन है, उतने अंश में बन्ध नहीं है; परन्तु जितने अंश में राग है, उतने अंश में बन्ध होता है।

जितने अंश में आत्मा के ज्ञान (सम्यग्ज्ञान) है, उतने अंश में बंध नही है, परन्तु जितने अंश में राग है उतने अंश में बंध होता है।

जितने अंश में इसके चारित्र (सम्यक्चारित्र) हैं, उतने अंश में इसके बंध नहीं होता है।''

इसप्रकार हम देखते हैं कि आचार्य अमृतचन्द का साहित्य जहाँ एक ओर अध्यात्म का अमृतरस से सराबोर है, वही दूसरी ओर इसकी पद्यकाव्यों में विविध प्रकार के छन्दों की इन्द्रधनुषी छटा भी दर्शनीय है।

अहिंसा के वास्तविक स्वरूप एवं रत्नत्रय के स्वरूप को निश्चय-व्यवहार की संधि को गहराई से समझने के लिए पुरुषार्थसिद्धयुपाय का आद्योपान्त अध्ययन एक बार अवश्य करें। ●

१. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय श्लोक – २१२,२१३,२१४

विचार गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : दिनांक 11 मई को राजस्थान जैन साहित्य परिषद् जयपुर और श्री दिगम्बर जैन मंदिर जवाहरनगर के संयुक्त तत्त्वावधान में '**कर्म सिद्धांत**' विषय पर विचार गोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में अन्तरराष्ट्रीय युवा विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के मार्मिक व्याख्यान का लाभ मिला

गोष्ठी के आरंभ में स्वागत उद्बोधन परिषद् के अध्यक्ष श्री महेशजी चांदवाड ने दिया। संरक्षक प्रो.नवीनजी बज ने गतिविधियों की जानकारी दी एवं मंत्री सी.ए. शांतिलालजी गंगवाल ने आगामी श्रुतपंचमी समारोह की जानकारी उपलब्ध करायी। गोष्ठी में सैंकड़ों साधर्मियों ने लाभ लिया।

अन्त में गोष्ठी के आयोजक डॉ. एस.के. जैन ने धन्यवाद ज्ञापित किया। मंच संचालन श्री सुदर्शनजी पाटनी ने किया।

उपकार दिवस सानन्द संपन्न

● **जयपुर (राज.) :** यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 12 मई को आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की 130वीं जयंती मनाई गई। इस अवसर पर प्रात: जिनेन्द्र पूजन के उपरांत डॉ. शांतिकुमारजी पाटील द्वारा समयसार पर प्रवचन का लाभ मिला। प्रवचन के पश्चात् आयोजित सभा में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. अरुणजी बंड, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', डॉ.संजयजी शास्त्री दौसा, पण्डित सोनूजी शास्त्री आदि विद्वत्गणों ने अपने विचार व्यक्त किये। साथ ही पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री ने कविता पाठ किया। कार्यक्रम का मंगलाचरण देवयश जैन एवं संचालन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

● **इन्दौर (म.प्र.) :** यहाँ रविन्द्र नाट्य गृह में श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट व मुमुक्षु समाज द्वारा दिनांक 5 मई को आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की 130वीं जन्मजयंती मनाई गई।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के जीवन पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। तत्पश्चात् ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली, ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, डॉ. मुकेशजी शास्त्री 'तन्मय' विदिशा द्वारा गुरुदेवश्री के जीवन संबंधित उद्बोधन हुए, जिसमें गुरुदेवश्री का जैनधर्म को योगदान, अध्यात्म की गहराई, अनेक प्रसंगों एवं संस्मरणों पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम में पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल, पण्डित ऋषभजी इंजी., पण्डित पदमजी गंगवाल आदि स्थानीय विद्वानों के अतिरिक्त श्री अशोकजी जैन 'अरिहंत केपिटल' मुम्बई, डॉ. अशोकजी जैन, श्री अशोकजी बड़जात्या, श्री सी.के. दोशी इन्दौर, श्री अशोकजी जैन 'सुभाष ट्रांसपोर्ट' भोपाल, श्री कमलजी बोहरा कोटा आदि महानुभाव उपस्थित थे। पाठशाला के बच्चों द्वारा भी प्रस्तुति दी गई।

कार्यक्रम का संचालन ट्रस्ट के अध्यक्ष विजयजी बड़जात्या एवं राजेशजी काला ने किया एवं आभार प्रदर्शन कोषाध्यक्ष पदमजी पहाड़िया ने किया।

इस प्रसंग पर जैन प्रश्नोत्तरी विज्ञान वाटिका प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण भी हुआ। विज्ञान वाटिका के पंचम पुष्प में 5000 प्रतियोगियों ने भाग लिया, जिसमें से श्रीमती प्रगति जैन-राजेश जैन छिन्दवाड़ा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय स्थान पर 4 लोगों को एवं तृतीय स्थान पर 6 लोगों को पुरस्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त 50 सांत्वना पुरस्कार, 28 मूलगुण पुरस्कार एवं 13 चारित्र पुरस्कार भी वितरित किये गये।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अशोकजी बड़जात्या ने की। मुख्य अतिथि के रूप में इंजी. अनिलजी उज्जैन एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री कमलजी बोहरा कोटा उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त श्री पदमजी पहाड़िया, पण्डित नागेशजी पिड़ावा, पण्डित ऋषभजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित संजीवजी दिल्ली, श्री अमितजी अरिहंत मड़ावरा आदि महानुभावों के साथ साथ सकल मुमुक्षु समाज, युवा फैडरेशन के पदाधिकारीगण एवं दिल्ली युवा फैडरेशन उस्मानपुर के सदस्यों की विशेष उपस्थिति रही।

आचार विचार संस्कार

अर्हं पाठशाला

महावीर के संदेशों को घर–घर तक पहुँचायेंगे

अर्हं पाठशाला

पण्डित टोडरमल मुक्त विद्यापीठ जयपुर द्वारा संचालित

अब ऑनलाईन
जैन पाठशाला
घर–घर तक
जन–जन तक

5 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के लिए

प्रवेश प्रारम्भ

रजिस्टर करें

सीमित स्थान

आप सीखेंगे

- जैनधर्म के मूलभूत सिद्धांतों को
- जैन सिद्धांतों का प्रायोगिक ज्ञान
- जीवन जीने की कला
- महापुरूषों का जीवन चरित्र
- नैतिकता
- सदाचरण
- चरित्र–निर्माण
- तनाव मुक्त जीवन

फॉर्म हेतु सम्पर्क करें :
8058890377

त्रैमासिक पाठ्यक्रम

मुख्य आकर्षण

प्रवेश शुल्क 300/- मात्र

- ★ विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा कक्षाऐं
- ★ पॉवर पाईण्ट प्रेजेन्टेशन
- ★ जूम एप द्वारा ऑनलाईन लाइव वीडियो कक्षाऐं
- ★ 6 भाषाओं में कक्षाऐं (हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, कन्नड, तमिल)
- ★ विश्व भर में कक्षाओं का संचालन
- ★ समस्या समाधान सत्र
- ★ प्राथमिक स्तर से उच्च स्तर तक सभी जैन पाठ्यकम उपलब्ध

DIRECTOR — एस. पी. भारिल्ल (विश्व प्रसिद्ध वक्ता); डॉ. संजीव गोधा (अन्तरराष्ट्रीय जैन विद्वान)

CO-DIRECTOR — पीयूष शास्त्री (प्रसिद्ध जैन विद्वान)

Chief Executive	Co-ordinator	In-charge	Executive
प्रतीति पाटील	आकाश शास्त्री 8770845953	जिनेन्द्र शास्त्री 9571955276	अर्पित शास्त्री 6350509218

E-learning of Mokshmarg

ಆಚಾರ ವಿಚಾರ ಸಂಸ್ಕಾರ

ARHAM PATHSHAALA

ಮಹಾವೀರನ ಸಂದೇಶಗಳನ್ನು ಮನೆ–ಮನೆಗೆ ತಲುಪಿಸಲು

ಅರ್ಹಂ ಪಾಠಶಾಲೆ

ಪಂಡಿತ ಟೋಡರಮಲ ಮುಕ್ತ ವಿದ್ಯಾಪೀಠ ಜಯಪುರದಿಂದ ಸಂಚಾಲಿತ

ಈಗ ಆನಲಾಯಿನ
ಜೈನ ಪಾಠಶಾಲೆ
ಮನೆ–ಮನೆವರೆಗೆ
ಜನ–ಜನಗಳಲ್ಲಿ

ಎಲ್ಲ ವಯಸ್ಸಿನ ವರ್ಗಗಳಿಗೆ

ಪ್ರವೇಶ ಪ್ರಾರಂಭ

ರಜಿಸ್ಟರ ಮಾಡಿ

ನೀವು ಕಲಿಯುವಿರಿ

- ಜೈನ ಧರ್ಮದ ಮೂಲಭೂತ ಸಿದ್ಧಾಂತಗಳನ್ನು
- ಜೈನ ಸಿದ್ಧಾಂತಗಳ ಪ್ರಾಯೋಗಿಕ ಜ್ಞಾನ
- ಜೀವನ ಜೀವಿಸುವ ಕಲೆ
- ಮಹಾಪುರುಷರ ಜೀವನ ಚರಿತ್ರೆ
- ನೈತಿಕತೆ
- ಸದಾಚಾರ
- ಚರಿತ್ರ–ನಿರ್ಮಾಣ
- ಒತ್ತಡ ಮುಕ್ತ ಜೀವನ

ಅರ್ಜಿ ಪ್ರಾಪ್ತ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲು ಸಂಪರ್ಕಿಸಿ :

ಕನ್ನಡ ಸಂಯೋಜಕ
ಆಕಾಶ ಹಳಾಜ ಶಾಸ್ತ್ರೀ
8741837909

ತ್ರೈಮಾಸಿಕ ಪಾಠ್ಯಕ್ರಮ

ಮುಖ್ಯ ಆಕರ್ಷಣೆ

ಪ್ರವೇಶ ಶುಲ್ಕ 300/–

- ★ ವಿಶೇಷಜ್ಞ ವಿದ್ವಾಂಸರಿಂದ ವರ್ಗಗಳು
- ★ ಪಾವರ ಪಾಯಿಂಟ ಪ್ರಜೆಂಟೆಶನ
- ★ ಝೂಮ ಅಪ್‌ನಿಂದ ಆನಲಾಈನ ವಿಡಿಯೋ ವರ್ಗಗಳು
- ★ 6 ಬಾಷೆಗಳಲ್ಲಿ(ಕನ್ನಡ, ಮರಾಠಿ, ಹಿಂದಿ, ಇಂಗ್ಲಿಷ,, ಗುಜರಾತಿ, ತಮಿಳ)
- ★ ವಿಶ್ವದೆಲ್ಲಡೆ ವರ್ಗಗಳ ಸಂಚಾಲನೆ
- ★ ಸಮಸ್ಯೆಗಳ ಸಮಾಧಾನ ಪತ್ರ
- ★ ಪ್ರಾಥಮಿಕ ಮಟ್ಟದಿಂದ ಉಚ್ಚ ಮಟ್ಟದವರೆಗೆ ಎಲ್ಲ ಜೈನ ಪಾಠ್ಯಕ್ರಮವು ಉಪಲಬ್ಧವಿವೆ

DIRECTOR — ಎಸ್. ಪಿ. ಭಾರಿಲ್ಲ (ವಿಶ್ವ ಪ್ರಸಿದ್ಧ ವಕ್ತಾ); ಡಾ. ಸಂಜೀವಜೀ ಗೋಧಾ (ವಿಶ್ವ ಪ್ರಸಿದ್ಧ ಜೈನ ಸಿದ್ಧಾಂತ)

ಸಹ–ನಿರ್ದೇಶಕ — ಪಂಡಿತ ಪೀಯೂಷಜೀ ಶಾಸ್ತ್ರೀ (ಪ್ರಸಿದ್ಧ ಜೈನ ವಿದ್ವಾಂಸ)

Chief Executive	Co-ordinator	In-charge	Executive
ಪ್ರತೀತಿ ಪಾಟೀಲ	ಆಕಾಶ ಶಾಸ್ತ್ರೀ	ಜಿನೇಂದ್ರ ಶಾಸ್ತ್ರೀ	ಅರ್ಪಿತ ಶಾಸ್ತ್ರೀ

E-learning of Mokshmarg

આચાર વિચાર સંસ્કાર

ARHAM PATHSHAALA

મહાવીર ના સંદેશો ને ઘર-ઘર સુધી પહુંચાડીસુ

અર્હં પાઠશાલા

પણ્ડિત ટોડરમલ મુક્ત વિદ્યાપીઠ જયપુર થી સંચાલિત

ઑનલાઈન
જૈન પાઠશાલા
ઘર–ઘર
જન–જન સુધી

બધા આયુ વર્ગ માટે

પ્રવેશ પ્રારમ્ભ

રજિસ્ટર કરો

સીમિત સ્થાન

તમે સીખસો

- જૈનધર્મના મૂલભૂત સિદ્ધાંતો
- જૈન સિદ્ધાંતોના પ્રાયોગિક જ્ઞાન
- જીવન જીવાની કલા
- મહાપુરુષોના જીવન ચરિત્ર
- નૈતિકતા
- સદાચરણ
- ચરિત્ર–નિર્માણ
- તનાવ મુક્ત જીવન

ફાર્મ લેવા માટે સમ્પર્ક સૂત્ર :-

ગુજરાતી સંયોજક
પલ ત્રિવેદી – ૮૯૫૫૨૩૬૦૧૪

ત્રૈમાસિક પાઠ્યક્રમ

મુખ્ય આકર્ષણ

પ્રવેશ શુલ્ક 300/-

- ★ વિશેષજ્ઞ વિદ્વાનોં ની કક્ષાઓ
- ★ પૉવર પૉઈણ્ટ પ્રેજેન્ટેશન
- ★ જૂમ એપ થી ઑનલાઈન લાઈવ વીડિયો કક્ષાઓ
- ★ ૬ ભાષાઓં માં કક્ષાઓ (હિન્દી, અંગ્રેજી, મરાઠી, ગુજરાતી, કન્નડ, તમિલ)
- ★ વિશ્વભર માં કક્ષાઓનો સંચાલન
- ★ સમસ્યા સમાધાન સત્ર
- ★ પ્રાથમિક સ્તરથી ઉચ્ચ સ્તર સુધી બધા જૈન પાઠ્યક્રમ ઉપલબ્ધ

નિર્દેશક — એસ. પી. ભારિલ્લ (વિશ્વ પ્રસિદ્ધ વક્તા); ડૉ. સંજીવ ગોધા (અન્તરરાષ્ટ્રીય જૈન વિદ્વાન)

સહ–નિર્દેશક — પણ્ડિત પીયૂષ શાસ્ત્રી (પ્રસિદ્ધ જૈન વિદ્વાન)

Chief Executive	Co-ordinator	In-charge	Executive
પ્રતીતિ પાટીલ	આકાશ શાસ્ત્રી	જિનેન્દ્ર શાસ્ત્રી	અર્પિત શાસ્ત્રી

E-learning of Mokshmarg

Journey from Devotee to Divinity

ARHAM PATHSHAALA

ARHAM PATHSHAALA

Conducted By Pandit Todarmal Mukt Vidhya Peeth - Jaipur

Online
JAIN PATHSHAALA
at Your
Fingerstep

Above 5 Years

Admissions OPEN

Register Now

Limited Seats

OBJECTIVES

- Basic Theory of Jainism
- Practical Applications of Jain Fundamentals
- Art of Living
- Learning Through Personalities
- Everyday Ethics
- Character Building
- Moral Conduct
- Stress Free Life
- One-on-One Conversation

For Registration Contact to:-
8058890377

Fees : 300/-

3 MONTHS COURSE

STAR FEATURES

- ★ Lectures By World Class Experts
- ★ Power Point Presentations
- ★ Online Video Live Classes Via Zoom App
- ★ Classes In Six Languages (Hindi, English, Marathi, Gujarati, Kannad, Tamil)
- ★ Problem Solving Sessions
- ★ Classes Across The Globe
- ★ Jain Course from Primary to
- ★ Higher Education

DIRECTOR — S.P. BHARILL (Internationally Renowned Speaker); Dr. SANJEEV GODHA (International Jain Scholar)

CO-DIRECTOR - Pt. Piyush Shastri (Renowned jain Scholar)

Chief Executive	Co-ordinator	In-charge	Executive
Pratiti Patil	Akash Shastri 8770845953	Jinendra Shastri 9571955276	Arpit Shastri 6350509218

E-learning of Mokshmarg

दुनिया भर में अर्हं पाठशाला की धूम

#पाठशाला पढ़ना Cool है !

ARHAM PATHSHAALA

ADMISSIONS OPEN

Contact No. 8058890377

INDIAN CITY

BANGALORE MUMBAI DELHI JAIPUR CHENNAI GUWAHATI GURUGRAM
MYSORE PUNE NASHIK KOTA AHMEDABAD RAJKOT BHOPAL NAGPUR INDORE

8058890377 arhampathshaala #MaukaBulayeAapko

पद्यात्मक विचार बिन्दु

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

प्रस्तुत पदों में हमारे विचारों, आचरण और व्यवहार में पायी जाने वाली विसंगतियों की ओर ध्यान दिलाते हुए कुछ ऐसे विचार बिन्दु प्रस्तुत किये गये हैं, जिन पर यदि गंभीरतापूर्वक गहराई से विचार किया जाये तो न सिर्फ हमारी विचारधारा में आमूलचूल परिवर्तन होगा वरन् निश्चित ही हमारे कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा। विचारशील पाठकों से अपेक्षा है कि इसका लाभ अवश्य लेंगे। अगले कुछ अंकों तक यह क्रम जारी रहेगा।

जग में भ्रमाते कर्म मुझे यह, रही मेरी मान्यता,
जो आज तक भगवन बने, कैसे गये वे शिव बता।
ये कर्म क्या बांधें तुझे, अस्पर्श तू निर्बंध है,
निज में ही स्थित लीन कुछ, पर से नहीं संबंध है।।८५।।

स्वाधीन हो उन्मूल दे, मिथ्यात्व को तू मूल से,
कोई न बांधे स्वयं बंधता, मात्र अपनी भूल से।
बंधन नहीं है और कुछ बस, बंध का स्वीकार है,
बंध से इन्कार कर, तू आतमा अविकार है।। ८६।।

कर्मों का आना और जाना, स्वयं उनका परिणमन,
उनके नियन्ता आप वे हैं, तू स्वयं अपने में मगन।
है कर्म जड़ पुद्गल अरे, तू आतमा चैतन्य है,
इस तरह तेरी कर्म से, जाति ही तो भिन्न है।। ८७।।

आत्मतत्त्व अबंध है, पर से नहीं संबंध है,
संबंध में सुख खोजना, यह बंध है बस बंध है।
अशुभशुभ में अरति-रति, यह बंध का सत्कार है,
जो बंध का स्वागत करे, यह बंध उसके द्वार है।। ८८।।

आगमन कर्मों का रुके, मिट जायेगा आवागमन,
कैवल्यरवि का उदय करता, दृष्टि का निज में रमण।
स्वागतम निज में तुम्हारा, मुक्ति का यह द्वार है,
निज छोड़ पर को ताकना ही, भ्रमण है संसार है।।८९।।

हो जायेंगे सब कर्म नष्ट, रह जायेगा निर्भार तू,
जब एक दिन कर पायेगा, निज रूप का निर्धार तू।
यह निर्जरा का हेतु है, यह मोक्ष का सत्कार है,
यह सब दु:खों का अंत है, सुख का न पारावार है।।९०।।

तू मुक्त है है मोक्ष तुझमें, तू तू स्वयं भगवान है,
श्रद्धान वा ज्ञान निज का, सम्यक्त्व दर्शन ज्ञान है।
लोक के उस अग्र में, वह शिव लोक तेरा वास है,
जहाँ न कोई दीनता है, नहीं किसी से आश है।। ९१।।

दुर्लभ अरे संसार में, इस सन्मार्ग का है पावना,
इसके लिये तो चाहिये, रे उत्कट हमारी भावना।
एक यह मिल जाये तो, निधियाँ मिली संसार की,
मुक्ति के इस पथिक को, क्या चाह हो घर द्वार की।।९२।।

सद्भाग्यवश यदि कोई नर, इस मार्ग पर भी आ गया,
जिनधर्म जिनगुरु शास्त्र, अनुकम्पा गुरु की पा गया।
फिर भी अरे इस मार्ग पर, चलना बड़ा दुश्वार है,
अरे अटकने-भटकने के, अवसर अनेक प्रकार हैं।।९३।।

श्रद्धा प्रथम तो चाहिये, जिन वचन आगम के लिये,
श्रद्धा बिना तो किस तरह, इक डग चले किसके लिये।
पर अन्धापन ना इष्ट है, ना मूढता स्वीकार है,
स्वपरीक्षित साधना ही, जिनधर्म का आधार है।। ९४।।

अवसर अटकने भटकने के, बिखरे पड़े हर मोड़ पर,
इसके लिये इक दृष्टि भेदक, चाहिये हर कदम पर।
अपवर्तन तनिक पथ से हुआ, तो दौड़ना बेकार है,
सिद्धि साध्य की है जीत तेरी, भटक जाना हार है।।९५।।

ना लक्ष्य की पहिचान है, ना मार्ग का निर्धार है,
भटका हुआ पर मानता, निज को निकट भवपार है।
अब लक्ष्य का निर्धार करके, मार्ग की पहचान कर,
एकांत दु:ख संसार है, इस सत्य को स्वीकार कर।।९६।।

(क्रमश:)

आखिर हम करें क्या?

1 –डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(दोहा)

आखिर अब हम क्या करें इतना हमें बताव।
हम अपने में जात हैं तुम अपने में जाव।। १।।

साम्यभाव धारण करो छोड़ो सभी विकल्प।
भजो अकर्त्ताभाव को हो जावो अविकल्प।। २।।

इस महा सत्य से तो हम सभी भलीभाँति परिचित ही हैं कि आज तक जितने भी आत्मा परमात्मा बने हैं; वे सभी एक ध्यान की अवस्था में ही बने हैं। जो भी जीव; रागी से पूर्ण वीतरागी, अल्पज्ञ से सर्वज्ञ और अनन्त दुखी से अनन्त सुखी हुये हैं; वे सब भी एकमात्र ध्यान की अवस्था में ही हुये हैं। इससे यह तो अत्यन्त स्पष्ट ही है कि एकमात्र धर्म; ध्यान ही है, आत्मध्यान ही है।

वैसे तो आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान भी ध्यान ही हैं; तथापि यहाँ जिस ध्यान की बात चल रही है; वह न तो आर्त्तध्यानरूप है और न रौद्रध्यानरूप; क्योंकि वे क्रमशः तिर्यंच और नरक गति के कारण हैं और न यहाँ उन शुक्लध्यानों की ही बात है, जो साक्षात् मुक्ति के कारण हैं और चौथे काल में ही होते हैं।

यहाँ तो उस धर्मध्यान की बात है; जो मोक्षमार्गरूप है, पंचमकाल के जीवों के होता है और चौथे गुणस्थान से सातवें गुणस्थान तक होता है।

धर्मध्यान चार प्रकार के हैं – १. आज्ञाविचय २. उपायविचय या अपायविचय ३. विपाकविचय और ४. संस्थानविचय।

इनका जो स्वरूप जिनागम में उपलब्ध है, वह सब विशेषकर स्वाध्यायरूप ही है। पर वे चार प्रकार के धर्मध्यान विकल्पात्मक होने से व्यवहार धर्मध्यानरूप ही हैं।

आज्ञाविचय नामक धर्मध्यान में चरणानुयोग में प्राप्त जिनाज्ञा का चिन्तवन किया जाता है, जिसके आधार पर श्रावकों और मुनिराजों का आचरण सुनिश्चित होता है। उपायविचय या अपायविचय धर्मध्यान में द्रव्यानुयोग में प्राप्त तत्त्वज्ञान का एवं सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र रूप मुक्तिमार्ग का और विपाकविचय तथा संस्थानविचय धर्मध्यान में करणानुयोग में समागत कर्मसिद्धान्त और जैनदर्शन संबंधी भूगोल का चिन्तन होता है।

इसप्रकार यह धर्मध्यान एकप्रकार से स्वाध्याय रूप ही है। स्वाध्याय में इनका अध्ययन और धर्मध्यान में इनका चिन्तन-मनन अधिक होता है। यद्यपि स्वाध्याय में भी चिन्तन तो होता है; तथापि ध्यान में उसकी मुख्यता रहती है। स्वाध्याय के पाँच भेदों में भी अनुप्रेक्षा नामक एक भेद है, जो चिन्तनरूप ही है।

स्वाध्याय में बाह्य प्रवृत्ति अधिक है और ध्यान में सब कुछ अंतरंग ही है।

(क्रमशः)

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

19 मई से 5 जून	सूरत	प्रशिक्षण शिविर
7 जून से 6 जुलाई	विदेश	तत्त्वप्रचारार्थ
2 से 11 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिविर
26 अग. से 2 सित.	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्यूषण

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की लेखनी से प्रसूत

चार अद्भुत नवीन कृतियाँ

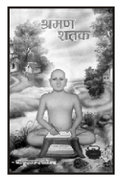

श्रमण शतक

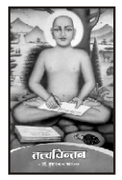

तत्त्वचिंतन

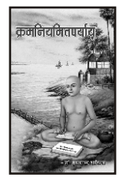

क्रमनियमितपर्याय

आखिर हम करें क्या?

मात्र 21/– रु. में चारों का सैट

आज ही ऑर्डर कर मंगावें।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015

मोबाइल नं.-9785645793 (नीशू शास्त्री) E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

विशेष व्याख्यान संपन्न

बिजौलिया (राज.) : यहाँ सीमंधर जिनालय में दिनांक 1 से 6 मई तक डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर द्वारा विशेष रूप से युवाओं के लिये व्याख्यानों का लाभ मिला।

इस अवसर पर प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार पर, दोपहर में तत्त्वचर्चा एवं सायंकाल विभिन्न विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला। बालकों की कक्षा पण्डित दुर्लभजी शास्त्री ने ली। सभी कार्यक्रम महावीर संदेश संस्कार शिविर के अन्तर्गत आयोजित हुये। **- रमेश जैन**

शोक समाचार

(1) दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षक, आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के अनन्य भक्त, श्री गजपंथा सिद्धक्षेत्र व श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट के अध्यक्ष, श्री सैतवाल दिगम्बर जैन संस्था के मार्गदर्शक व कई अन्य संस्थाओं के आधार स्तम्भ **गजपंथा-नासिक (महा.) निवासी ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर** का दिनांक 10 मई को अत्यंत शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

आपकी स्मृति में ज्ञाततीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 11 मई को तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के सान्निध्य में श्रद्धांजलि सभा आयोजित हुई, जिसमें डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने धन्यकुमारजी का परिचय देते हुए श्रद्धांजलि समर्पित की। श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री) एवं श्रीमती कमला भारिल्ल ने भी श्रद्धांजलि समर्पित की। सभा में ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदिका के अतिरिक्त अनेक महानुभाव उपस्थित थे। अंत में नौ बार णमोकार मंत्रपूर्वक सभा समाप्त हुई।

(2) खनियांधाना (म.प्र.) निवासी श्रीमती प्रभादेवी जैन धर्मपत्नी श्री सुरेशचंदजी जैन साव (माताश्री संजय शास्त्री, राजीव, अभिषेक) का दिनांक 17 मार्च को समता व वैराग्यभाव सहित देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली व अचलजी शास्त्री खनियांधाना की चाचीजी थीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 500/- रुपये प्राप्त हुये।

(3) बांसवाड़ा (राज.) निवासी श्री जयन्तीलालजी भरडा का दिनांक 10 मई को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे एवं पूरे परिवार को भी स्वाध्याय हेतु प्रेरित करते थे। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित रितेशजी शास्त्री, डडूका के पिताजी थे।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

बाल संस्कार शिविर एवं शिलान्यास समारोह संपन्न

सनावद (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन परमागम ट्रस्ट एवं दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल द्वारा दिनांक 19 से 23 अप्रैल तक 7वाँ बाल-युवा संस्कार शिविर लगाया गया।

इस अवसर पर पण्डित रितेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित सम्मेदजी सिद्धार्थी टीकमगढ एवं पण्डित विवेकजी शास्त्री बण्डा ने बालकों की कक्षा तथा विदुषी राजकुमारीजी दिल्ली व विदुषी प्रमिलाजी इन्दौर ने महिलाओं की कक्षा ली। शिविर में श्री चौबीस तीर्थंकर विधान, पार्श्वनाथ व महावीर पंचकल्याणक विधान भी हुये।

इसी प्रसंग पर नवनिर्मित श्री 1008 महावीर स्वामी जिनमंदिर के अन्तर्गत 27 वेदियों एवं 4 जिनालयों का भव्य शिलान्यास समारोह भी आयोजित हुआ। कार्यक्रम में इन्दौर, मुम्बई, खण्डवा, अहमदाबाद, उज्जैन, रतलाम, बड़नगर, जावरा, डासाला, मलकापुर, बेडीया, बड़वार, उदयपुर, जबलपुर आदि स्थानों से लगभग 700 साधर्मियों ने पधारकर लाभ लिया। महोत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर (अध्यक्ष-दिगम्बर जैन महासमिति) एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री विजयजी बड़जात्या इन्दौर, श्री संजयजी कागदी इन्दौर, श्री अनिलजी पाटोदी उपस्थित थे।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

प्रकाशन तिथि : 13 मई 2019

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com